The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 5 | May 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

संताली साहित्य में स्त्री विमर्श: एक अध्ययन

Dr. Jatindra Nath Besra

Assistant Professor, Department of Santali, MSCB University, Takatpur, Baripada, Mayurbhanj, Odisha-757003, Gmail- besrabayar777@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20688222

संताली एक भाषा है, जो संताल लोगों द्वारा बोली जाने वाली है। संताली भाषा सबसे ज्यादा झारखंड राज्य में बोली जाती है। इसके अलावे बंगाल, उडिसा, असम एवं बिहार आदि राज्य में बोली जाती है। साहित्य तो हम आप सभी को पता है, साहित्य समाज का दर्पण है। किसी भी समाज का उसकी खान पान, रहन सहन, पहनावे, पुजा पद्धति, संस्कृति आदि से हमसब को पता चल जाता है, कौन से साहित्य या फिर समाज को प्रतिनिधित्व कर रहा है। हमसब आसानी से पता लगा लेते है। इसलिए ही साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। जिस तरह एक परिवार को चलाने के लिए स्त्री-पुरूष की आवश्यकता होती है, उसी तरह ही किसी भी समाज के साहित्य समृद्धि करने के लिए स्त्री-पुरूष की समान भागीदारी होनी चाहिए। संताल समाज हमेशा से ही स्त्री को एक समान दर्जा दिया है।

संताली साहित्य भी सदियों से समृद्धि रहा है। हम सबने सुना इतिहासकार द्वारा हमारे भारत देश में समय-समय पर विभिन्न लोगों ने शासन किया है, जैसे- आर्यों ने, मुगलों ने, फिर 1600 ईसवी में अंग्रेजों का आगमन हमारे भारत देश पर होता है। लगभग 345 साल तक अंग्रेजों ने हमारे देश पर शासन किया। तो दो शासक को भी हमारे भारत देश में 345-345 वर्ष देते है, मानकर चलते है। क्योंकि अंग्रेजों के आगमन तो पता है 1600 ई. में आते है और 15 अगस्त 1947 को हमारा भारत देश आजाद हो जाता है। ये तीन शासक आर्य, मुगल एवं अंग्रेज इन तीनों के शासन काल से पहले भी संताली साहित्य का वर्णन लोकगीत में मिलता है –

"मुर्मू ठाकुर कोदो बाबा	**अर्थात** - मुर्मू ठाकुर बाबा
पुथी बाबाको पाड़हावा	किताब पढ़ रहे बाबा
बादोली कोंयडा गाड़ ते	बादोली कोंयडा गाड़
लिखोन चालाक् कान।"[1]	लिखाई जा रहा है।

इस गीत से साफ पता चलता है, संतालों का भी कभी समृद्धि साहित्य रहा होगा, जो किताब पढ़ने की बात या फिर लिखाई जा रहा है बादोली कोंयडा गाड़ को। लेकिन जब अंग्रेज आये उन लोग हमारे भारत देश पर अपना

व्यापार बढ़ाने के साथ-साथ यहाँ के लोगों पर अपना ईसाई धर्म को भी प्रचार करना प्रांरभ किया और उसमें संतालों को अपने और आर्कषित करने के लिए संताली भाषा बोलना भी सिखा और लोकगीत, कहानी, कहावत आदि का संग्रह कर रोमान लिपी में पुस्तक प्रकाशित किया। रेव. जर्मिया फिलिफ्स सबसे पहले 1836 में उडिसा के जलेश्वर में प्रथम प्राथमिक विद्यालय की स्थापना किया। रेव. जर्मिया फिलिफ्स साहब ही 1845 साल में एक पुस्तक प्रकाशित होता है लोकगीत, कथा, कहानी आदि का। फिर से 1852 में एक और पुस्तक रेव. जर्मिया फिलिफ्स द्वारा ही "एन इन्ट्रोडक्शन टु द संताली लैंगवेज" । इसके साथ Rev. Otis R, Bachelor,, E.L. Puxley, Dr. C.R. Lepsus, Rev. W.T. Ston, Rev. Lars Olsen Skrefsrud, P.O. Bodding, A. Campbell आदि मिशनारी लेखकों का योगदान रहा है।

इसके बाद संतालों के पहले लेखक माझी रामदास टुडू "रास्का" किताव का नाम "खेरवाल वंश धरम पुथी" 1897-98 ई. में ये वंगला लिपी से प्रकाशित हुआ। इसके बाद 1936 ई. में श्रीमान् पाउल जुझार सोरेन के कविता नाम है, "ओनोड़हे बाहा डालवाक्", ये किताव रोमन लिपी से प्रकाशित हुई थी। इसके बाद साधु रामचाँद मुर्मू, पंडित रघुनाथ मुर्मू से लगातार संताली साहित्य की चर्चा काफी तेज हुई। हमारे संताली साहित्यकार द्वारा काल विभाजन देखने को मिलता है, जो इस प्रकार है-

प्राचीन या मौखिक साहित्य काल– 1845 के पूर्व
मिशनारी काल 1845 – 1889 तक
मध्यकाल 1890-1946 ई. तक
वर्तमान काल 1947 से अभी तक

यहाँ तक की साहित्य चर्चा में संताली की रचना में कोई भी संताल स्त्री की रचनायें नहीं मिलती है। पर साहित्य में भले ही इनकी साझेदारी नही दिखती हों। समाज में पुरूषों के बराबर अधिकार दिया गया है। जब संताल के पुर्वज पिलचु हाड़ाम, पिलचु बुढ़ी द्वारा पाँच पुत्र और छः पुत्रियों का जन्म होता है। जब ये बड़े हो जाते है तो पिलचु हाड़ाम सारावना जंगल में अपना जिविकापार्जन के लिए ले जाता है और पिलचु बुढ़ी अपने पुत्रियों को वो भी जंगल में ले जाती है खाने पीने की खोज में। अगर उस समय ही पिलचु हाड़ाम मना करता नहीं तुम लोग को कहीं नहीं जाना है। हमलोग जायेंगे, सभी के लिए खाना जुगाड़ करके लायेंगे, लेकिन नहीं उनलोगों को भी स्वतंत्रता छोड़ा गया। संताल समाज में पहले से ही समाज में स्त्री-पुरूष की समान भागीदारी है, जैसे- खेत में काम करना, पुजा-पाठ, शादी व्याह, जंगल पत्ता, मेला, यात्रा, नाचना गाना आदि। हाँ,आप सब सोचते होगें, तो संताल समाज में स्त्रियाँ पढ़ने लिखने में काफी पिछड़ी हुई है कैसे ? पहले जमाने में एक माता पिता पाँच, सात, आठ बच्चा हुआ करते थे और सिर्फ खेतीवारी पर ही निर्भर रहते थे, मुश्किल से खाना पीना जुगाड़ होता था, फिर भी परिवार शांति से जीते थे, आज हम आधुनिक युग में जी रहे है सभी, सभी चीजें योजना करके चलाया जा रहा है, एक दो बच्चे करके भी शांति नहीं है।

हाँ, संताल समाज में एक और खासियत है, अपने माँ-बाप को कोई वृद्धा आश्रम नहीं भेजते है। भले घर छोटे हों,उसी में सब रहते है, खुशियाली जीवन जिते है। आज संताल समाज में अपना समान भागीदारी निभाते हुई संताल स्त्रियाँ भी हर क्षेत्र में अपना कदम बढ़ाई है। आज की स्थिति में देखें तो निचले स्तर से लेकर देश के सर्वोच्च पद तक। संताल समाज में लड़की का जन्म होना लक्ष्मी आना समझा जाता है। ये जुम्ले नहीं ये हकीकत है। संताल समाज में कन्या खोजी जाती है वर नहीं। किसी को अगर शादी करना है तो वर पक्ष वाले कन्या पक्ष को दो बैल देने की प्रथा है। अगर मन लिया किसी माँ बाप के पाँच बेटी है तो दस बैल हों जायेंगे, तो वे माता पिता धनी बनेंगे ना, लेकिन किसी माँ बाप के अगर पाँच बेटा रहेंगे, तो अपने बेटों को कैसे ब्याह करेंगे उसको सोचना पड़ेगा।

संताली भाषा दिसंम्बर 2003 को भारतीय संविधान के आँठवीं अनुसूची में शामिल होने से पहले तक संताल लेखकों ने जो भी जिस राज्य में रह रहा था, वह वहाँ की लिपी से ही साहित्य की रचनाऐं कर रही थी। जैसे- बिहार/झारखंड में देवनागरी, उडिसा के उडिया लिपी, बंगाल से बंगाली लिपी आदि लिपियों से संताली साहित्य की रचनाऐं चल रही थी कभी रूकी नही है। लेकिन एक दिक्कत का सामना करना पड़ रहा था। हम आप सबको पता है केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली साहित्य रचना के क्षेत्र में सम्मान प्रदान करता है तो संताली भाषा के क्षेत्र में भी देने का विचार हुआ, लेकिन किसको सम्मानित किया जाए ? समस्या देखा गया लिपी का, संताल होते हुए भी एक राज्य के दूसरे राज्य के संताली भाषा की किताब को ना पढ़ पाना, तभी 27 जून 2005 को सभी राज्य से संताल लेखकों को बुलाया गया, सभी ने अपने–अपने राज्य के लिपी से संताली लिखने की बात किया पर बात नहीं बनी, साहित्य अकादमी की और से एक सुझाव आया, आप लोग ऐसे लिपी का चयन करो जो सभी को सहमत हो जो "एक भाषा एक लिपी" के तर्ज पर साहित्य रचना हो सके। तब अंतिम विकल्प था "अलचिकी" लिपी, जो पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा बनाई गई लिपी, जो संताली भाषा के साथ-साथ अग्नेय परिवार की सभी भाषा बहुत आसानी से लिखा जा सकता है। पंडित रघुनाथ मुर्मू जी 1925 ई. में लोगों के सामने प्रस्तुत कर दिये थे। आज पुरे भारत वर्ष के अलावे बंग्लादेश एवं नेपाल देश में भी "अलचिकी" लिपी द्वारा ही विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक आज पढ़ाई हो रही है। आज हमारे संताल समाज में साहित्य की रचना में भी स्त्रियों का काफी योगदान दे रहे है-

सबसे पहले डॉ स्टेनशीला हेम्ब्रम जी नाम आता है। स्टेनशीला 1947 को दुमका जिला के शिवटोला गाँव में जन्म ली थी। पढ़ने लिखने में काफी तेज थी M.A., B.Ed. LLB की भी डिग्री प्राप्त की थी। वह भागलपुर विश्वविद्यालय से Ph.D. भी प्राप्त थी। उसकी शोध पत्र की बिषय- संतालों की संस्कृति दर्पण, चल चकवाक् देश एक कविता भी है। दुमका के एस.पी कॉलेज के प्रिन्सिपल भी रही है।

दुमका जिला के ही और एक लेखिका श्रीमती सहागिनी टुडू, एम.ए. उर्तीण कर डाक विभाग में कुछ दिन नौकरी की, सिदु कान्हु विश्वविद्यालय से पीएच.डी. डिग्री प्राप्त की, इनके कोई भी किताब प्रकाशित नही हुई, तो पर भी पत्र-पत्रिका में कविताऐं प्रकाशित हुई मिलती है। और एक झारखंड के ही महिला लेखिकाओं में निर्मला पुतुल

मुर्मू, यशोदा मुर्मू, जोबा मुर्मू, रानी मुर्मू, सोनाली हाँसदा, माही मार्डी आदि। एक समय निर्मला पुतुल मुर्मू की नाम काफी चर्चित थी। इनके माता पिता- स्व. सिरील मुर्मू और श्रीमती- कान्दनी हाँसदा, इनका गाँव- दुधनी कुरूवा, जिला- दुमका, संताल परगना, झारखंड, ये विभिन्न मुद्दों पर कार्य किये है, जैसे- आदिवासी महिलाओं का विस्थापन, पलायन, उत्पीड़न,स्वास्थ्य, शिक्षा, जेन्डर संवेदनशील, मानवाधिकार एवं सम्पत्ति पर अधिकार देने के लिए कार्य किये। इसके साथ शिक्षा के क्षेत्र में ग्रामीण, पिछड़ी, दलित, आदिवासी, आदिम जनजाति महिलाओं के बीच शिक्षा एवं जागरूकता के लिए विशेष प्रयास किया। वह सामाजिक क्षेत्र में काम करने के लिए विभिन्न संस्थाओं के साथ मिलकर काम की। हिन्दी में उनकी कविता प्रकाशित हुई है- नगाड़े की तरह बजते शब्द, अपने घर की तलाश में, फूटेगा एक नया विद्रोह आदि। ये पुस्तक संताली में भी प्रकाशित किया है। इसके अलावे निर्मला पुतुल मुर्मू जी को विभिन्न संस्थाओं से सम्मानित किया जा चुका है।

श्रीमती यशोदा मुर्मू पीएनबी में नौकरी कर रही है। राँची विश्वविद्यालय से संताली में एमए की है। साहित्य में उसका एक लेखिका में कवियत्री के नाम से उनको जाना जाता है, उसकी अबकत प्रकाशित हो चुकी किताब है "तोवा दारे", "सावंहेद डार" और "गुड मेसा गड़म रासा", "सिद हालाङ गालाङ माला"। उनकी कविता में उनके संघर्ष के बारे ज्यादा कविताऐं मिलती है। स्त्रियों के प्रति भी अपने संदेश में लिखती है-

"धारती रे जानाम ताम	**अर्थात** - धरती पर जन्म तुम्हारी
चाँदो ऐमाक् जिवी ताम	भगवान का दिया जीवन तुम्हारी
मोनेजिवी आलोम काँहिस	अपने मन को कभी उदास मत करना
तिरला होपोन आम।"[2]	स्त्री जन्म है तुम्हारी।

यशोदा मुर्मू जी कि परिवार लेखकों का परिवार है, पिता सीआर माझी, पति- पितंवर हाँसदा, भाई- रविन्द्र नाथ मुर्मू, उसकी बहन ताला टुडू, उसकी बेटी सोनाली हाँसदा से सभी लेखक है। उसके किताब है- "बाहा उमुल" (कविता), "बेवरा" (कहानी), "गिताजंली" और "प्रेमचाँद" की कहानी (अनुवाद), "अनल बाहा" (बाल साहित्य) जो साहित्य एकाडेमी से पुरस्कृत है।

रानी मुर्मू वर्तमान में युवा लेखिका होने का महत्वपूर्ण स्थान रखा है। वह कहानी ही ज्यात्तर लिखती है। उसके एक कहानी है, होपन माईयाक् कुकमु (छोटी बेटी की स्वपन) के लिए उसे साहित्य अकादमी अवार्ड से भी नवाजा गया है। उसकी कहानियों में ज्यात्तर महिलओं की प्रधानता मिलती है। ऐसे ही और एक महिला युवा लेखिका है माही मार्डी का किताव "पे टिडाक् सिंदुर" (तीन टिका सिन्दुर) उपन्यास है। और ऐक लेखिका रूकमनी टुडू उसके किताव है "चिरगाल आड़ाङ" (जागरूक संदेश), ऐसे ही और एक सालगे हाँसदा की "जानाम दिसम उजाड़ोक् कान" (जन्म भुमि उजड़ रही है), सोनाली हाँसदा की "कुकमु" (स्वपन) कविता है। ये सब युवा लेखिका है।

पश्चिम बंगाल के महिला लेखिका में से मायरानी मार्डी, पार्वती मुर्मू, लीलावती मुर्मू, चिन्मयी हाँसदा, मालती बेसरा, सोभा हाँसदा, स्वपन हेम्ब्रम,सारदा मुर्मू, जलेश्वरी हाँसदा, संघमित्रा हाँसदा, मालती हेम्ब्रम बास्के, अंजला किस्कु आदि प्रमुख रूप से साहित्य चर्चा के साथ-साथ अन्य में भी आगे बढ़ रहे है। चिन्मयी हाँसदा ये मयुरभंज उडिसा के रहने वाली है, लेकिन झाड़ग्राम में रह रही है अभी वह बंगाल की लेखिका के रूप में ही उसकी पहचान है। उनकी दो पुस्तक प्रकाशित हुई है, "पटकोज" (अंकुर), "अमन" (निकलना)। इस किताब में वह अपना स्वपन और समाज के विभिन्न अंग को चित्र को दिखाने की कोशिश की है। सुचित्रा हाँसदा वर्तमान के युवा लेखिका है। वह एक शिक्षिका है। अभी तक की उनकी लिखी हुई पुस्तक है- "बेड़ा आहला", "डोम्बे बाहा", "ढिलवाङ", "जुवान दाड़े", "खोदा" ये प्रकाशित हो चुकी है। ये कविता और लेख दोनों लिखती है। इनको भी साहित्य अकादमी की और से अवार्ड मिला हुआ है। ये युवाओं के लिए एक संदेश दिया है-

"नित खेरवाड़ होपन जुदी	**अर्थात** अभी खेरवाड़ भाई अगर
बाङबोन जुमिदोक्-आ	एकता नहीं हुए
सानाम खेरवाड़ होपोन	सभी खेरवाड़ भाई
हिंसा सेंगेल रेबोन लो तोरोज्-आ।"[3]	हिंसा की आग में जलकर राख हो जायेंगे।

मालती बेसरा की पुस्तक का नाम है, "मिद होबोर पराईनी", सोभा हाँसदा की "ईञाक् कुकमु", स्वपना हेम्ब्रम की "पातनी", सीदा मुर्मू की "मन पराईनी बाहा", जलेश्वरी हाँसदा की "तिकिन तारास", संघमित्रा हाँसदा की "दुलाड़ आनाट", मालती हेम्ब्रम बास्के की "सापाप", अंजली किस्कु की "मिद बिता" ये सभी उभरती हुई लेखक है।

उडिसा के महिला लेखिकाओं में डॉ. दमयंती बेसरा, मिना मुर्मू बास्के, मायनो टुडु, सलिमा मारान्डी, सुमित्रा सोरेन, सरोजनी बेसरा आदि। मिना मुर्मू की "तावाक् तारको" ये कहानी किताव है ये साहित्य अकादमी की और से प्रकाशित हुई है। इसकी परिचय एक कहानीकार के रूप में है। उसकी एक और कहानी पुस्तक है "आरसाल", मायनो टुडू एक "संताली शब्दकोश" बनाई है। इसके अलावे एक पुस्तक "जियन होरा" इस पुस्तक के लिए उन्हें साहित्य अकादमी की और से युवा साहित्य अवार्ड भी मिला है। सलिमा मार्डी ये भी कविता लिखती है, उसके पुस्तक का नाम है "गुलापी थोपे"। सुमित्रा सोरेन कहानीकार है उसके पुस्तक का नाम है "कापुरमुली", "मिद बिरना चेड़े सावं ईञाक् ञापाम", "गुपी गिदरा" और "स्वपन"। दो कविताऐं भी लिखी है- "कोयेल" और "रेंगेज" होड़ाक मेद दाक्। कहानी द्वारा ही स्त्रियों को जगाने का संदेश दिया है।

सबसे जानेमाने लेखिका डॉ. दमयंती बेसरा ये एम.पी.सी कॉलेज के उडिया विभाग के प्रोफेसर, प्रिसिपल भी बनी कॉलेज के अभी सेवानिवृति हुई। उडिया साहित्य के साथ-साथ संताली साहित्य की भी काफी चर्चाऐं और किताब भी लिखी है संताली भाषा साहित्य के लिए, संताली भाषा साहित्य के महत्वपूर्ण गदान के लिए उन्हें पद्मश्री

सम्मान से भी सम्मानित किया गया है। अभी उनकी कलम रूकी नहीं है, अभी तक 22 पुस्तक संताली भाषा के, 7 उडिया भाषा से प्रकाशित हो चुकी है। 10 पुस्तकों का वह अनुवाद कर चुकी है।

पहले भी संताल समाज की स्त्रियाँ कंधे पे कंधे मिलाकर काम ही है और पुरूषों की जितनी भागिदारी समाज में है, उतना ही भागिदारी संताल स्त्रियों का भी है। हाँ यहाँ तक तो ठीक है, अभी भी दूसरे समाज की नजर में संताल स्त्रियों को दबाया गया है या दबाया जा रहा है, ऐसे कभी-कभी बात निकालकर सामने आती है, और वो बात है जमीन की हिस्सेदारी की। देखिये, यहाँ बात को गंभीरता से समझने की जरूरत है। देखकर कुछ भी बोल देना ये सभी के लिए बहुत की आसान बात है, लेकिन संताल आदिवासी अपना जमीन आजतक क्यों बाँटता है इसके बारे में कोई नहीं सोचा होगा कभी भी ? आदिवासियों ने यहाँ जमीन को बनाया है, किसी से माँगा या हड़पाया गया जमीन नहीं, इसलिए तो हमारे आदिवासी भाईयों के पास कुछ हो ना हो पर जमीन तो है। सब मिलकर रहने या खेती लायक जमीन बनाया है तो स्वाभाविक है जमीन का उपभोग भी समान ही करेंगे। संताल परिवार एकल परिवार नहीं वो संयुक्त परिवार के सदस्य होते है, और आज भी शहर छोड़ गाँव में जितने भी लोग रह रहें है, वह सभी संयुक्त परिवार के हिस्से है। उनलोगों का खेती जमीन हो या घर बनाने की जमीन वो जमीन पुर्वजों के नाम से है। उसके अपने जमीन में खेती करने घर बनाने सभी अनुमति है जितना भी हिस्सेदारी में आये पर उस हिस्सा को कोई भी अपने व्यक्तिगत नाम पे नहीं कर सकता है। मान लिया एक माँ-बाप के तीन बेटे और दो बेटी है। उसके भाग में तीन बिघा जमीन मिला है। बच्चे भी बड़े होंगे आज नहीं तो कल उनका शादी होगा, बेटियों का भी शादि होने के बाद अपने सास-ससुर को घर चल जायेगी। मान लिया नहीं शादी करती है या होती है कोई बात नहीं। पर ये जो माँ-बाप के एक-दो बेटा शादी करने के बाद फिर उस जमीन की हिस्सेदारी की बात उठती है। वो भी ठीक है, जमीन है तो सबको ही अपना हिस्सा का जमीन मिलेगा।

चलो देखते है जमीन की बाँटवारा कैसे होती है संताल समाज में आज जानेंगे। माँ-बाप के हिस्सा में कितना जमीन है तीन विघा, सदस्य है माँ-बाप, बच्चे तीन, बहने दो (शादी हो चुकी होने पर जमीन की हिस्सेदारी बेटी को नहीं मिलती, नहीं होने पर मिलती है हिस्सेदारी)। चलो कुल आदमी हुए 7(सात), जमीन है 3 (तीन) विघा। इसमें सबको अपना हिस्सा मिलेगा वह भी समान-समान, माँ के लिए, पिता के लिए, तीन भाईयों – बहन में एक का शादी हो गया एक घर में है शादी वाली को छोड़कर सभी को अपना अलग-अलग हिस्सा मिलेगा। अगर जमीन बँटी तो स्वभाविक है आदमी भी अलग-अलग रहेंगे। लेकिन ये तीन बेटों में जितना भी हिस्सा आये अपने नाम पर नहीं करवा सकते, माँ-बाप या बहन भी नहीं। कुछ दिन के बाद माँ-बाप बुढे हो जाते है, खेती सम्भव नहीं है, तीनों भाई में कोई एक भाई उनको फिर पालेंगे तो वही उसके हिस्सा में जितना जमीन है वह जोतेगा। मान लिया जिसकी शादी हुई थी, किसी कारणवश महेशा के लिए ससुराल से मायके आते है, फिर यहाँ इनको भी अपना हिस्सा मिलता है, उतना दिन तक जितना दिन तक मायके में रही है, लेकिन ये भी अपने नाम जमीन नहीं लिख सकती है।

अतः में, मैं बस इतना ही कहूँगा संताल समाज में लड़कियों को लक्ष्मी माना है। सदियों से उसे उतना आजादी दी है समाज जितना पुरूषों को दिया गया है। आज अगर दुनिया में जमीन बची हुई है तो सिर्फ आदिवासियों में आज देश में जमीन के लिए मारामारी चल रहा है, आज आदिवासी युवतियाँ भी पढ़ लिखकर अच्छे-अच्छे पद पर कार्यरत है, लेकिन हमारे आदिवासी युवतियों को आज लव जिहाद्द में फंस रहे है। अदिवासी लड़की के साथ अच्छे दाम्पती जीवन बिताने के लिए नही, नजर है सम्पत्ती या फिर जमीन हड़पने की। इस तरह हमारे आदवासी युवकती लव जिहाद्द में फंसकर बेमौत मरी जा रही है। ये ही हमारे आदिवासी समाज की बहुत बड़ी क्षति है। अपने समाज में हम तो जमीन या सम्पती के लिए लड़ाई भी नही लड़ते पर विकसित समाज में अन्य द्वारा ऐसे घटना घटाये जाने पर हम चिंतित है।

सहायक सूची/ग्रंथ –

1. मुर्मू लखनचंद्र, सान्ताड़ी सांवहेद, पृ.सं.- 40
2. बेसरा प्रो.(डॉ) दमयंती, मारे काथा नावां सावहेद, पृ.सं.-84
3. वही, पृ.सं.- 86